उपसंहार

उपसंहार

व्यक्ति से समाज बनता है। हम समाज में रहते हुए भी समाज की कुछ विकृतियाँ, विद्रुपताएँ और समस्याओं की ओर हमारा ध्यान नहीं जाता। समाज का सूक्ष्म अध्ययन करके साहित्यकार ही अपनी प्रतिभा के आधार पर उन्हें अपने साहित्य के द्वारा प्रकट करता है। साहित्यकार यह नहीं लिखता कि भविष्य में क्या होनेवाला है वह हमेशा समाज का यथार्थ चित्रण करने का प्रयास करता है। समाज की समस्याएँ और विकृतियाँ तथा रीति-रिवाज आदि की ओर उंगली निर्देशित करता है। जनता का सुख-दु:ख उनके जीवन की व्यथा को साहित्यकार ही जानता है। जो साहित्यकार समाज का यथार्थ चित्रण नहीं करता उसे सफल साहित्यकार नहीं कहा जाता। साहित्यकार समाज के सामने एक मिसाल होती है। उसके आधार पर समाज अपना विकास करता रहता है। हिंदी साहित्य में कहानी एक ऐसी विधा है जिसके आधार पर साहित्यकार इन सभी समस्याओं का चित्रण बड़ी खूबी से चित्रित करता है।

आज के विज्ञान युग में व्यक्ति के पास समय बहुत कम होता है। वह हमेशा कम समय में अधिक पाने का प्रयास करता है। कहानी एक ऐसी विधा है जिसके आधार पर पाठक अत्यंत कम समय में बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकता है। काल्पनिक कहानियों को उतना महत्त्व नहीं मिलता जितना समाज का वास्तविक चित्रण करनेवाली कहानियों को मिलता है। भारतेंदु युग से कहानी-विधा चलती आ रही है लेकिन उस युग में अनेक कहानियाँ काल्पनिक और हास्य-प्रधान लिखी गई हैं। द्विवेदी युग में पत्रिकाओं का जन्म हुआ और कहानी का रूप निखर आया। सन् 1912 से 1918 के बीच वह पूर्णत: प्रतिष्ठित हो गई है। छायावाद युग में प्रेमचंद ने सामाजिक समस्याओं को उठाया। इस युग में सुदर्शन, उग्र और जैनेंद्र का योगदान महत्त्वपूर्ण है। छायावादोत्तर काल में यशपाल, अज्ञेय, उपेंद्रनाथ अश्क आदि ने मनोविश्लेषणात्मक कहानियाँ लिखी। इसके आगे नई कहानी का आंदोलन चला जिसमें मोहन राकेश, कमलेश्वर तथा राजेंद्र यादव महत्त्वपूर्ण हैं, उन्होने सामाजिक यथार्थता का ही चित्रण किया हुआ है।

सन् 1950 के बाद की कहानियों में क्रमश: वैयक्तिकता का दबाव बढ़ता गया। कुछ देर के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति का जोश आंचलिक कहानियों में अभिव्यक्त हुआ पर वह कहानी की विकास यात्रा का अस्थाई पक्ष था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में अनेक समस्याएँ निर्माण हो गई। सन् 1962 का चीन-भारत युद्ध, अकाल और विभाजन आदि के कारण देश की दुर्दशा हो गई थी। जनता घायल हो चुकी थी। स्वतंत्रता के पहले जनता का सपना था स्वतंत्रता मिलने पर देश में सुख-शांति होगी। लेकिन देश के नेताओं ने कुटनीति के आधार पर जनता का शोषण करना शुरू किया। देश के रक्षक ही भक्षक बन गए। उपर्युक्त परिस्थितियाँ सन् 60 के बाद के कहानीकारों ने अपनी आँखों से देखी है। उन्होंने इसी शोषित जनता की समस्याएँ और विवशताओं का चित्रण अपनी कहानियों में किया हुआ है। जिसमें दूधनाथ सिंह, काशीनाथ सिंह, रवींद्र कालिया, से. रा. यात्री, महीप सिंह तथा ज्ञानरंजन आदि कहानीकार आते हैं।

उपलब्धियाँ -

साहित्यकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में घनिष्ट संबंध होता है। साहित्यकार अपने जीवन में जो भोगता, जानता और देखता है वही वह अपने साहित्य में उतारता है। इस कारण किसी भी साहित्यकृति का अध्ययन करने से पहले उसके लेखक का जीवन परिचय देखना जरूरी होता है। ज्ञानरंजन का जन्म समृद्ध परिवार में हुआ है। ज्ञानरंजन का बचपन अलग-अलग जगह और सुख में बीत गया है। पिता सुविख्यात लेखक और गाँधीवादी विचारधारा के थे। ज्ञानरंजन की माँ आजीवन बीमार रही थी। उनकी शिक्षा एम्. ए. तक ही हो चुकी है। उन्होंने पीएच्. डी. का कार्य अधूरा छोड़ दिया है। उनके गुरू सुविख्यात साहित्यकार डॉ. धर्मवीर भारती थे। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय सें अपनी पढ़ाई पूरी की। महाविद्यालयीन जीवन से ही लिखने का शौक रहा है। उसी समय उनकी कुछ प्रेम-लिलाएँ भी हो गई थी। अंत में उन्होंने प्रेम विवाह ही किया। उनका स्वभाव मिलनसार है, समय को बहुत महत्त्व देते हैं। अपनी प्रशंसा सुनना उन्हें पसंद नहीं है। उनके विचारों में ठोसपन दिखाई देता है।

उनके कार्य को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया है। जीवन की राह पर चलते कभी दुश्मनों का सामना करना पड़ा, कभी दोस्त दुश्मन बने तो कभी दुश्मन दोस्त बने। उन्होंने अपने अंदर का कहानीकार जब

से खोया है, 'पहल' के लिए जीवन अर्पण किया है, जो आज भी कार्यरत है। न कभी किसी का सहारा लिया और न कभी किसी के साथ समझौता किया। सच्चाई की राह पर चले। व्यक्ति से बढ़कर संस्था को महत्त्व दिया। नए का स्वागत और पुराना जो अच्छा है वह स्वीकारना उनका स्वभाव है। उनकी लगभग 16 कहानियों का कथानायक 'मैं' के रूप में है। वह 'मैं' शिक्षित और बेकार है। लगता है ज्ञानरंजन को अपनी शिक्षा-पूरी होने पर नौकरी के लिए भटकना पड़ा था। यही भटकन उन्होंने 'दिवास्वप्नी' का इंदो और 'संबंध' का 'मैं' के द्वारा प्रकट की होगी। यही उनके कहानियों की विशेषता है।

ज्ञानरंजन की कहानियों में कथावस्तु और चरित्र की अपेक्षा विचार अधिक महत्त्वपूर्ण है। कहानी पढ़ने पर पाठक को विचार करने के लिए मजबूर करती है। यह उनकी कहानियों की विशेषता है।

अब तक ज्ञानरंजन की सिर्फ 26 कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी कहानियों का केंद्र मध्यवर्गीय परिवार है। पारिवारिक कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन की विडंबना, त्रासदी, घुटन, विवशता, असफलता आदि दिखाई देती हैं। परिवार में जो अजनबीपन, परायापन, व्यक्तिवाद की भावना दिखाई देती है उसकी अभिव्यक्ति 'कलह', 'शेष होते हुए', 'अमरूद का पेड़' आदि कहानियों के द्वारा हुई है। प्रेम कहानियों में प्रेम की जगह ऊब, वासना, प्रेम का बदलता रूप और प्रेम की कुरूपता दिखाई देती है। यौन समस्या की अभिव्यक्ति 'खलनायिका और बारूद के फूल', 'हास्यरस', 'दांपत्य', 'रचना-प्रक्रिया' आदि कहानियों के द्वारा हुई है। देश विषयक कहानियों में 'अनुभव', 'बहिर्गमन' और 'घंटा' आदि कहानियाँ प्रमुख हैं, जिनमें गुमराह युवक तथा देश की दुर्दशा की अभिव्यक्ति हुई है।

ज्ञानरंजन ने परिवार को केंद्र में रखकर लगभग 12 कहानियाँ लिखी हैं। आज के विज्ञान युग में परिवार में पति-पत्नी, पिता-पुत्र, पिता-पुत्री, माता-पुत्र, माता-पुत्री, भाई-भाई आदि के बीच तनाव और संघर्ष दिखाई देता है। परिवार में एक दुसरे के प्रति अविश्वास बढ़ता जा रहा है। अजनबीपन, घुटन, व्यक्तिवाद की भावना आदि के कारण परिवार में संघर्ष निर्माण हो रहा दिखाई देता है। जहाँ आर्थिक तनाव कम है, वहाँ पारिवारिक संबंध में तनाव कम है और जहाँ आर्थिक तनाव की तीव्रता है वहाँ परिवार में तनाव अधिक है। 'पिता' कहानी में नायक का बड़ा भाई नौकरी करता है, तो परिवार में भ्रातृत्व संबंध में संघर्ष नहीं है। किंतु 'संबंध'

कहानी में नोकरी की वजह से बड़ा भाई छोटे भाई का मर जाना ही ठीक समझ रहा है। 'क्षणजीवी' कहानी का नायक पैसों के अभाव के कारण पिता के मृत्यु की कामना करता है। बहन अपने भाई के साथ खुले मन से अपने प्रियकर की बात बता देती है। इसकी अभिव्यक्ति 'दिलचस्पी' कहानी में मुकुल और उसकी बहन नमिता के द्वारा होती है। पिता-पुत्र के रिश्तों में अंतर आ गया है। 'फेंस के इधर और उधर' कहानी के आधुनिक विचार के पिता को छोड़कर हर कहानी में पिता अपने पुत्र के प्रति कठोरता से पेश आते हुए दिखाई देते हैं। लेकिन पुत्र अपने पिता के साथ संघर्षमय क्यों न हो साथ जीवन जी रहा है। पिता-पुत्री के रिश्तों में तनाव है। पिता अपने लिए नई स्त्री घर में लाना चाहते हैं और पुत्री उनका विरोध करने का प्रयास कर रही है। इसकी अभिव्यक्ति 'कलह' की स्वाति और उसके पिता के द्वारा होती है। पुत्री अपनी माँ को समझने में असफल है लेकिन माँ को पुत्री की चिंता है। माता अपने पुत्र के भविष्य से चिंतित है और पुत्र माँ को समझ नहीं रहा है। इसकी अभिव्यक्ति 'कलह' की स्वाति और उसकी माँ तथा 'संबंध' में कहानी के नायक का छोटा भाई और उसकी माँ के द्वारा हुई है। ऐसी कोई कहानी नहीं है जिसमें माता अपने संतान के प्रति कठोर हो आई है। सास-बहू संबंध में अंतर आ गया है जिसकी अभिव्यक्ति 'शेष होते हुए' कहानी में मझले की माँ और उसकी भाभी के द्वारा होती हुई दिखाई देती है।

आज 'दांपत्य' संबंध टूटते हुए दिखाई देते हैं। पत्नी अपने पति को सहजता से किसी दुसरे के साथ शरीर संबंध रखने का मौका देती है और पत्नी भी अपना पति होते हुए अपने पुराने प्रियकर के साथ मजें में घूमना चाहती है। इसकी अभिव्यक्ति 'रचना-प्रक्रिया' कहानी का कथानायक 'मैं' और उसकी पत्नी के द्वारा तथा 'दिवास्वप्नी' की मीरा और उसके पति के द्वारा होती है।

जिस परिवार में सदस्य अधिक हैं उसी परिवार में आर्थिक समस्या तीव्रता से दिखाई देती है और जिस परिवार में सदस्य मर्यादित हैं वहाँ आर्थिक समस्या इतनी तीव्र नहीं है। जिस परिवार में सदस्य अधिक हैं उसी परिवार में संघर्ष है तो जिस परिवार में सदस्य मर्यादित हैं वहाँ संघर्ष न के बराबर है। 'संबंध' के कथानायक का परिवार बड़ा है तो उसके परिवार में संघर्ष है। 'फेंस के इधर और उधर' कहानी में पुरानी पीढ़ी के परिवार में सदस्य अधिक हैं तो वहाँ भी तनाव है लेकिन उसी कहानी में आधुनिक विचार के परिवार में सदस्य तीन

है तों वहाँ संघर्ष नहीं है। 'अमरूद का पेड़', 'मनहूस बंगला' आदि कहानियों के द्वारा इसकी अभिव्यक्ति होती है।

युवा शक्ति देश की संपत्ति होती है किंतु शिक्षित होकर भी नौकरी न मिलने पर दिशाहीन होकर गलत रास्तें से जा रहे दिखाई देते हैं। वर्तमान युवा पीढ़ी में व्यसनाधीनता बढ़ रही है। ज्ञानरंजन की हर कहानी का कथानायक सिगारेट पीता हुआ दिखाई देता है। सही समय पर विवाह न होने के कारण यह कुंठित युवक प्रौढ़ स्त्रियों के पीछे पड़ते हैं और हर पल सपनों की दुनिया में जीते हैं। हर पल अपमान और मजबूरी का जीवन जीते हैं। कभी-कभी असहाय होकर आत्महत्या का विचार भी उनके मन में आता है। परिवार में रहकर अकेलापन महसूस कर रहे हैं। इसकी अभिव्यक्ति 'दिवास्वप्नी' का इंदो, 'दिलचस्पी' का मुकुल, 'बहिर्गमन' का मनोहर, 'संबंध' का 'मैं' और 'अनुभव' का 'मैं' के द्वारा होती है। जिस युवक को नौकरी नहीं है वही युवक दिशाहीन दिखाई देता है। 'पिता' कहानी का नायक नौकरी करता है तो वह दिशाहीन नहीं है लेकिन 'संबंध' के नायक का छोटा भाई 'शेष होते हुए' का मझला बेरोजगार है इस कारण दिशाहीन है।

आज प्रेम की जगह वासना और ऊब ने ले ली है। प्रेम का अर्थ सीमित हो रहा है। प्रेम मन का नहीं शरीर का भाग बन गया है। लड़कियाँ जब तक परिवार से दूर रहती हैं तो अपने लिए बॉयफ्रेंड़ रखती है किंतु वही लड़कियाँ अपने विवाह का निर्णय खूद नहीं ले सकती। प्रेम विवाह आज हास्य का विषय बनता जा रहा है। बरसों से प्रेम करने वाला प्रेम विवाह के बाद अपनी पत्नी से डर रहा है। उसे अपनी पत्नी की बहन अब पत्नी से अधिक सुंदर दिखाई देती है। प्रेम करने में आनंद मानता है लेकिन जीवन के अंत तक उसके साथ रहना उसे पसंद नहीं है। इसकी अभिव्यक्ति 'दिवास्वप्नी' के इंदो और मीरा, 'खलनायिका और बारूद के फूल' में कथानायक 'मैं' और प्रेमिका, 'हास्यरस' के पति-पत्नी और 'दांपत्य' कहानी के कथानायक 'मैं' और उसकी पत्नी तथा 'याद और याद' का कथानायक 'मैं' आदि के द्वारा होती है।

अकेलापन आज हर व्यक्ति की प्रवृत्ति बन रही है। अपने ही परिवार में व्यक्ति अकेला हो जा रहा दिखाई देता है। एक ही परिवार के सदस्य एक-दूसरे की ओर शंका की दृष्टि से देख रहे हैं। आज के वर्तमान युग में विवशता से काम करने पड़ते हैं। उसके साथ अन्याय हो रहा है यह जानकर भी विरोध नहीं कर सकता

क्योंकि विषम परिस्थितियों की बेड़ियों से उनके हाथ बंद किए हुए हैं। इसकी अभिव्यक्ति 'घंटा' कहानी का नायक 'मैं' और कुंदन सरकार के द्वारा होती है। 'मैं' चाहकर भी कुंदन का विरोध नहीं कर सकता। 'शेष होते हुए' का मझला, 'कलह' की स्वाति, 'संबंध' का बड़ा भाई, 'बहिर्गमन' का मनोहर आदि के द्वारा भी इसकी अभिव्यक्ति होती है।

शहरों में गुड़ागर्दी, हत्याएँ, धोका आदि ने साधारण रूप धारण किया हुआ दिखाई देता है। गुंड़ागर्दी आज प्रतिष्ठा का साधन बन रही है। 'अनुभव' कहानी का पात्र मोईत्रा द्वारा इसकी अभिव्यक्ति हुई है। साथ ही आवास की समस्या का भी चित्रण दिखाई देता है।

समाज में मध्यवर्ग हमेशा प्रयत्नशील रहा है। ज्ञानरंजन की सभी कहानियाँ मध्यवर्गीय जिंदगी की विड़ंबना ही है। उनकी हर कहानी का पात्र मध्यवर्गीय है। मध्यवर्ग को हमेशा कुछ पाने की आशा होती है। इस कारण वह हर पल सही-गलत मार्ग का सहारा लेकर जीता है। एक सपना टूटता है तो दूसरा नए सिर से लेकर जीता है। आशावाद पर जीनेवाला मध्यवर्ग हमेशा शोषकों की ही जय करता है। एक पल जीने के लिए सौ बार मरने को तयार होता है। हर समय किसी की चापलुसी करता है और लाचार जीवन जीता है। इसकी अभिव्यक्ति 'घंटा' कहानी का 'मैं', 'बहिर्गमन' का सोमदत्त के द्वारा होती है। 'घंटा' का 'मैं' कुंदन की लात-घुसे खाता है फिर भी उसके साथ रहता है। 'अनुभव' का नायक शहर में गलत दोस्तों के साथ दोस्ती करता है और शराब पीता है, वेश्या के पास जाता है। 'बहिर्गमन' का मनोहर पैसों के लिए अपना परिवार छोड़कर परदेस जाता है। मध्यवर्ग हमेशा कुछ सीमा तक ही अन्याय सहन कर लेता है सीमा के बाहर का वह विरोध करता हुआ दिखाई देता है। 'घंटा' का नायक अंत में कुंदन को गालियाँ देता है यह विरोध सिर्फ कुंदन का नहीं तो वह उन तमाम शोषकों का है जो कुंदन जैसा व्यवहार करते हैं और कथानायक 'मैं' उन सभी मध्यवर्ग का प्रतीक है जो गलत नेता के पिछे पड़े हुए रहते हैं।

आज विज्ञान का युग है। शिक्षा का प्रसार सभी जगह हो गया है। फिर भी हमारे देश में अंधविश्वास विद्यमान हैं जिसकी अभिव्यक्ति 'संबंध' कहानी के शिक्षित नायक द्वारा होती है। 'अमरूद का पेड़' में नायक की माँ और 'मृत्यु' का समाबहादुर अशिक्षित है जो अंधविश्वासू दिखाई देते हैं।

स्वतंत्रता के बाद चंद लोगों के स्वार्थ हेतु देश की दुर्दशा हो गई है। राजनीति में सत्ता के लिए पक्ष-विपक्ष निर्माण हो गए। वही नेता लोग शिक्षित युवकों को गुमराह करने लगे और उनका प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष शोषण करने लगे हैं। युवक भी विवशतावश उनकी ही तरफदारी करते हैं। इसकी अभिव्यक्ति 'घंटा' कहानी में 'मैं' और कुंदन नेता के द्वारा होती है।

अर्थ को समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान है किंतु आज व्यक्ति से बढ़कर अर्थ को महत्त्व मिल रहा है। पैसों के आगे पिता, परिवार और पत्नी की कीमत गौण हो गई है। 'क्षणजीवी' का कथानायक पैसा न देने के कारण पिता को गालियाँ देता है। 'बहिर्गमन' का मनोहर परिवार छोड़कर परदेस जाता है। अर्थ के कारण परिवार बिखर रहा है, तो पिता-पुत्र में संघर्ष हो रहा है। तो कभी पैसों के अभाव में किसी की मृत्यु हो रही है। इसकी अभिव्यक्ति 'शेष होते हुए' तथा 'मृत्यु' कहानी द्वारा होती है। जिस परिवार में नौकरी करनेवाला कोई है उस परिवार में आर्थिक समस्या नहीं है। 'पिता' कहानी का नायक नौकरी करता है तो परिवार में आर्थिक समस्या नहीं है लेकिन 'क्षणजीवी' और 'संबध' कहानियों के नायक बेकार हैं इस कारण परिवार में आर्थिक समस्या दिखाई देती है।

साठोत्तरी कहानीकारों ने देश को पारतंत्र में देखा था। अंग्रेजों की कठोर नीति और नीचता देखी थी। उस समय देश में अकाल, भुखमरी, बेरोजगारी और उपर से अंग्रेजों के अन्याय से जनता घायल हो चुकी थी फिर भी देश के लोगों में एकता थी। इसकी अभिव्यक्ति 'मृत्यु' कहानी के द्वारा होती है। समाबहादुर ठंड़क के कारण मर जाता है लेकिन अपने भारतीय दोस्त को ठंड़क से बचाने के लिए अपना कंबल दे देता है। कहानीकार ने अंत में उसकी मृत्यु दिखाई है, मतलब स्वतंत्रा का सपना देखनेवाला देश की स्वतंत्रता देखने नहीं रह पाया।

भारतीय समाज रूढ़ि और परंपरा प्रिय है। हर समय नए आचार-विचार समाज में आते हैं लेकिन पुरानी पीढ़ी यह विचार स्वीकारने को तैयार नहीं होती और नई पीढ़ी उन्हें लेकर आगे नहीं बढ़ सकती। उनके पास भविष्य के सपनों का एक रफ ड्राप्ट होता है और पुरानी पीढ़ी के पास अनुभवों का जंजाल होता है।

इसकी अभिव्यक्ति 'पिता' का कथानायक 'मैं' और पिता, 'शेष होते हुए' का मझला और उसके पिता तथा 'अमरूद का पेड़' का कथानायक और उसके पिता द्वारा होती है।

आज के युग में विवाह की अनेक पद्धतियाँ हैं। ज्ञानरंजन की कहानियों में रजिस्ट्रार और आर्य समाज की पद्धतियों से विवाह हो रहे दिखाई देते हैं। रजिस्ट्रार मॅरेज से समय और अर्थ कम व्यय होता है। इसकी अभिव्यक्ति 'फेंस के इधर और उधर' में आधुनिक पीढ़ी के परिवार की लड़की का विवाह और 'हास्यरस' में कथानायक और उसकी प्रेमिका के द्वारा होती है।

भाषा अभिव्यक्ति का साधन होती है। जिसकी अभिव्यक्ति सहज होगी वही साहित्य श्रेष्ठ होता है। ज्ञानरंजन की कहानियाँ सहज ध्यान में आती हैं। बोलचाल की भाषा और अंग्रेजी शब्द का अधिक प्रयोग दिखाई देता है। अरबी, फारसी, संस्कृत आदि शब्दों का भी प्रयोग कहीं-कहीं दिखाई देता है। मुहावरें-कहावतों का भी प्रयोग सफलतापूर्वक हुआ है। कहानियों में आत्मकथात्मक, डायरी, वर्णनात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, सांकेतिक, व्यंग्यात्मक आदि शैलियों का सफल प्रयोग दिखाई देता है।

निष्कर्षत: ज्ञानरंजन की कहानियों का पूरा अध्ययन-विश्लेषण करने के बाद यह स्पष्ट है कि ज्ञानरंजन ने अपनी कहानियों में व्यक्ति के अंदर की विकृतियों और विद्रुपताओं को पकड़कर बाहर निकालने का प्रयास किया है। व्यक्ति के अंदर की कायरता, पलायनवादी भावना, कुंठित और दमित वासना के कारण व्यक्ति में निर्माण हो रही मनोग्रंथियों को दिखाया है। नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी के साथ संघर्ष के साथ चल रही है। युवक शिक्षित हैं फिर भी बेकार हैं तो गलत मार्ग पर जा रहे हैं। स्वतंत्रता के बाद भी पुरानी परंपरा और अंधविश्वास दिखाई देता है। रिश्तों में अंतर आ गया है। मूल्य बदल रहे हैं। व्यक्तिवाद के कारण संयुक्त परिवार बिखर रहा है। शहर आज गंदे नाले बनते जा रहे हैं। दिशाहीन युवकों की संख्या बढ़ रही है। शहरों में आवास की समस्या बढ़ रही है। अनमेल विवाह के कारण दांपत्य संबंध टूट रहे हैं। समय पर विवाह न होने पर युवक कुंठीत हो रहा है। प्रेम का स्वरूप बदल रहा है। एक ही परिवार के सदस्य एक-दूसरे को शंका की दृष्टि से देख रहे हैं। परिवार में अविश्वास, घुटन, संत्रास, अजनबीपन, परायापन बढ़ रहा है। संयुक्त परिवार में आर्थिक संघर्ष है, विभक्त

परिवार में न के बराबर है। मध्यवर्ग हमेशा आशावादी रहा है। क्योंकि पैसों के अभाव में ही सभी समस्याएँ उपलब्ध हो रही दिखाई देती हैं।

ज्ञानरंजन की हर कहानी का प्रमुख पात्र प्रयत्नशील है भले ही प्रयत्न को अपयश मिले। कभी-कभी असफलता के कारण आत्महत्या का विचार उनके मन में आता है लेकिन उसके जीने की इच्छा उसे मरने नहीं देती। पुत्र पिता के विचारों का विरोध करके साथ-साथ जीवन जी रहा है। हर कहानी में पिता का कठोर व्यवहार है। हर कहानी की माँ विवश है वह अपनी संतान के भविष्य से चिंतित है। ऐसी कोई कहानी नहीं जहाँ माँ अपनी संतान का तिरस्कार कर रही है। इस कारण सभी कहानियों की माँ एक समान दिखाई देती है। यहाँ लगता है कि ज्ञानरंजन की माँ भी आजीवन बीमार रही और न उसने कभी किसी का विरोध किया है ज्ञानरंजन भी अपनी माँ से बहुत प्यार करते हैं इस कारण यहाँ लगता है कि सभी माताएँ ज्ञानरंजन की ही माँ होगी।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता -

(1) ज्ञानरंजन की कहानियों में चित्रित पारिवारिक जीवन का चित्रण पारस्पारिक संबंधों के आधार पर प्रस्तुत किया है।

(2) ज्ञानरंजन की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन की विड़ंबना और समस्याओं का विवेचन सूक्ष्मता से किया है।

(3) विवेच्य कहानियों का सूक्ष्मता से अध्ययन करके शिल्प को जानने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत शोध कार्य की उपलब्धियाँ -

(1) ज्ञानरंजन साठोत्तर कहानीकार हैं। मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्रण करके उनके अंदर की कमियाँ और कायरतापन और समस्याओं की ओर निर्देश किया है।

(2) शिक्षित युवक गलत नेता का अनुगमन करते हैं उन्होंने अपने आप को स्वतंत्र जीने की आदत डालनी चाहिए।

(3) नई पीढ़ी को चाहिए कि वह पुरानी पीढ़ी को ठीक से समझ ले।

(4) परिवार में व्यक्तिगत विचार स्वातंत्र्य होना चाहिए।

(5) रूढ़ि, परंपरा, कर्मठता को तिलांजली देनी चाहिए।

(6) असफल हताश युवकों का चित्रण प्रमुख रूप से कहानियों में है। ऐसे युवकों को कहानीकार स्वतंत्र व्यवसाय करने की प्रेरणा देता है।

(7) संयुक्त परिवार की खामियों की ओर दृष्टिपात कर आज की परिस्थिति में विभक्त परिवार योग्य है इस प्रकार की स्थापना आपने की है।

(8) कहानियों में कथावस्तु और चरित्र की तुलना में विचार महत्त्वपूर्ण है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ -

ज्ञानरंजन की कहानियों को लेकर इस दिशा में भी शोध-कार्य किया जा सकता है -

(1) ''ज्ञानरंजन की कहानियाँ:शेष होते हुए लोगों का दस्तावेज।''

(2) ''ज्ञानरंजन की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन।''